



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-1 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक एक | PDF

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग

श्लोक 1

श्रीभगवानुवाच ।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥1॥

सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

मैंने इस अविनाशी और सनातन योग का उपदेश सबसे पहले सूर्यदेव विवस्वान को दिया था। विवस्वान ने इस दिव्य ज्ञान को मनु को बताया और मनु ने इसे आगे राजा इक्ष्वाकु को प्रदान किया। इस प्रकार यह दिव्य योग गुरु-शिष्य परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता आया।

विस्तृत व्याख्या

सनातन योग का प्रारम्भ

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं



कि कर्मयोग और आत्मज्ञान का यह दिव्य मार्ग कोई नया उपदेश नहीं है। यह अनादि काल से चला आ रहा सनातन ज्ञान है, जिसे उन्होंने सृष्टि के प्रारम्भ में सूर्यदेव विवस्वान को प्रदान किया।

यह दर्शाता है कि भगवद्गीता का ज्ञान शाश्वत है और समय के साथ इसकी महत्ता कभी कम नहीं होती।

गुरु-शिष्य परम्परा का महत्व

भगवान बताते हैं कि यह ज्ञान विवस्वान से मनु और मनु से इक्ष्वाकु तक पहुँचा। इससे स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक ज्ञान सदैव योग्य गुरु से योग्य शिष्य तक परम्परा के माध्यम से पहुँचता है।

जब ज्ञान परम्परा से सुरक्षित रहता है, तब उसकी शुद्धता और वास्तविक अर्थ भी सुरक्षित रहते हैं।

विवस्वान, मनु और इक्ष्वाकु का महत्व

विवस्वान सूर्यदेव हैं, जिन्हें समस्त जीवन का आधार माना जाता है। मनु मानव जाति के आदिपुरुष हैं और इक्ष्वाकु सूर्यवंश के प्रथम राजा माने जाते हैं।

इससे भगवान यह बताते हैं कि यह योग केवल संन्यासियों के लिए नहीं, बल्कि गृहस्थों, राजाओं और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से उपयोगी है।



अविनाशी योग का स्वरूप

भगवान इस योग को “अव्यय” अर्थात् अविनाशी कहते हैं।

समय, स्थान या परिस्थितियाँ बदल सकती हैं, किन्तु सत्य, धर्म, निष्काम कर्म और आत्मज्ञान के सिद्धांत कभी नहीं बदलते।

जो व्यक्ति इस योग का पालन करता है, वह जीवन में स्थायी शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करता है।

ज्ञान कर्म संन्यास योग की दृष्टि

यह अध्याय सिखाता है कि ज्ञान और निष्काम कर्म का मार्ग सनातन है। जब मनुष्य भगवान के बताए हुए मार्ग पर श्रद्धा, भक्ति और समर्पण के साथ चलता है, तब उसका जीवन धर्ममय बनता है और वह कर्मबंधन से मुक्त होने लगता है।

मुख्य बिंदु

- भगवान श्रीकृष्ण ने इस सनातन योग का उपदेश सबसे पहले विवस्वान को दिया।
- विवस्वान ने यह ज्ञान मनु को और मनु ने इक्ष्वाकु को प्रदान किया।
- दिव्य ज्ञान गुरु-शिष्य परम्परा से सुरक्षित रहता है।
- यह योग अनादि, अविनाशी और सार्वकालिक है।
- ज्ञान और निष्काम कर्म का मार्ग सभी मनुष्यों के लिए है।



- श्रद्धा और परम्परा के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान सुरक्षित रहता है।
- भगवान का यह उपदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना सृष्टि के प्रारम्भ में था।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक बताता है कि आध्यात्मिक ज्ञान किसी एक युग या व्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सनातन सत्य है। भगवान स्वयं इस ज्ञान के आदि गुरु हैं। जब साधक श्रद्धा, विनम्रता और गुरु-परम्परा के माध्यम से इस दिव्य ज्ञान को ग्रहण करता है, तब उसके जीवन में विवेक, धर्म, निष्काम कर्म और आत्मज्ञान का प्रकाश होता है। यही ज्ञान अंततः मनुष्य को कर्मबंधन से मुक्त करके परम शांति और मोक्ष की ओर ले जाता है।

पदों का भावार्थ

इमम् – इस

विवस्वते – सूर्यदेव विवस्वान को

योगम् – दिव्य योग (ज्ञान एवं कर्मयोग)

प्रोक्तवान् – उपदेश दिया

अहम् – मैंने

अव्ययम् – अविनाशी, सनातन



विवस्वान् – सूर्यदेव

मनवे – मनु को

प्राह – कहा, बताया

मनुः – मनु

इक्ष्वाकवे – राजा इक्ष्वाकु को

अब्रवीत् – बताया, उपदेश दिया

श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि भगवद्गीता का दिव्य योग सनातन, अविनाशी और गुरु-शिष्य परम्परा से प्राप्त होने वाला ज्ञान है। यह केवल किसी विशेष वर्ग के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए है। जो व्यक्ति श्रद्धा, भक्ति और निष्काम भाव से इस दिव्य ज्ञान को अपनाता है, वह धर्म, आत्मज्ञान और अंततः मोक्ष की प्राप्ति करता है।



RELATED ARTICLE



Chapter-3 Shalok-43



Chapter-4



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

